शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-18 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-2.2042 ISSN-2454-6283 Oct.-Dec., 2019

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

ISSUE-18 VOL-1 IMPACT -2.2042 ISSN-2454-6283

अनुक्रमणिका

1. समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी चेतना –प्रा. डॉ. अंजली चौधरी–05
2. नारी विमर्श आर हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ–जयश्री नायक–08
3. अरुण कमल की कविता में प्रकृति चित्रण–रजनी कुमारी पाण्डेय–13
4. 'संकेतार्थ वैज्ञानिक आलोचना : सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक चिंतन'–शिल्पी कुमारी सिंह–17
5. भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्याः एक अध्ययन–मनोज कुमार वर्मा–22
6. समकालीन कविता : मानवीय मूल्यों की अवधारणा–डॉ. अनिता कुमारी यादव–26
7. हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का सहपाठियों के साथ समायोजन एवं उनके व्यवहारगत समस्याओं के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन–अमित सिंह–30
8. डूंगरपुर जिले की जलवायु एवं प्राकृतिक वनस्पति–विनोद पाटीदार–38
9. नागार्जुन के काव्य में व्यंग्यः–एक अवलोकन–डॉ0 राजीव कुमार–41
10. डूंगरपुर राज्य की सांस्कृतिक विविधता–पाटीदार दिनेश कुमार–45
11. भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में बेरोजगारी की समस्या–मंजुला अग्रवाल–डॉ.साहिरा बानू बी.बोरगल–53
12. हिंदी के विकास में अनुवाद का योगदान–प्रा. डॉ. बेवले ए. जे–47
13. आदिवासी जीवन का पारिस्थितिक सन्दर्भ और समकालीन हिंदी कविता–प्रणीता .पी ,हिंदी विभाग–51
14. साहित्य में प्राकृतिक पर्यावरणीय चित्रण–डॉ. यादव रंजना यदुनंदन–56
15. हिंदी भाषेतील आत्मकथने–डॉ. सविता खोकल–58
16. STUDY OF FISH FAUNA OF THE YAMUNA RIVER AT PRAYAGRAJ(U.P.) INDIA Dr. Indra Mani Pandey-60
17. बदीउज्जमॉ की कालजयी : रचनाएँ तथा चरित्र सृष्टि–प्रा.डॉ. इंगोले.एम.डी–65
18. ज्ञानोदय विद्यालयों के विद्यालयीन वातावरण और विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि का अध्ययनः–श्रीमती कमलेश शर्मा— डॉ0 सुबोध सक्सेना– डॉ0 हेमंत कुमार खण्डाई–68
19. गोदान का गोबर महतोः युवा चेतना का बीजांकुर–डॉ. हरेराम सिंह–72
20. .मणिपद्म एवं प्रमुख उपन्यासकारक उपन्यासमे दलित चेतनाक विमर्श–रोहित रमण राघव–75
21. मृणाल पाण्डे का उपन्यास–साहित्य–आलोक प्रेमी–80
22. A Review- On Nanomaterials and their Impact on Human health Kamlesh Kumar, Pradeep Kumar-85
23. समकालीन हिन्दी गज़ल और मुनव्वर राना–डॉ.सचिन कदम–90
24. मा.रामदासिया कांशीरामजी ,हरिसिंहजी यांचे धम्म व सांस्कृतिक चळवळीतील योगदान :एक चिकित्सक अभ्यास–प्रा.पालकर प्रशांत –94
25. उपन्यासों में किसान जीवन–प्रा.डॉ.ठाकुर व्ही.सी.–98
26. डोगरी लिपि दा संस्कृत लिपि देवनागरी तगर दा सफर–सतीश कुमार–101
27. विश्वभाषाओं से हिंदी में अनूदित भावबोधपरक साहित्य–प्रा.भारती महादेव सानप–103
28. ऊसशेतीचे व ऊस उद्योगाचे चित्रण करणाऱ्या कादंबऱ्यांतून अालेली प्रादेशिकता–प्रा.डॉ. बाबुराव खंदारे,–106
29. वेब सर्चिंग की उपयोपिता–डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव–109
30. मा.कांशीरामजी रामदासिया यांचे वृत्तपत्र व प्रसार माध्यमाच्या चळवळीतील योगदानः एक चिकित्सक अभ्यास ॥ प्रशांत पालकर–111
31. 31.आंबेडकरी कथेचा उदय व विकास : एक आकलन–प्रा.डॉ. बाबुराव खंदारे,–115

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

27.विश्वभाषाओं से हिंदी में अनूदित भावबोधपरक साहित्य"

प्रा.भारती महादेव स.नप
हिंदी विभाग प्रमुख
शासकीय ज्ञान–विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

विश्वभाषाओं और हिंदी का संबंध पहले की अपेक्षा आज बहुतायत निजी हो गया है। आज के इस वैऽाकिरणयुग की परिधि में हिंदी मात्र राष्ट्रभाषा नहीं रहीं, वह जागतिकिकरण में अपनी पहल जमाने में जीत हासिल कर रही हैं। बहुतांशतः कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग ने प्रायः उसके भविष्य को उजागर कर दिया है। हिंदी भाषा एवं उसके साहित्य ने जागतिकीकरण में अपने योग का बहुमोल परिचय स्थापित किया है। आज कम्प्यूटर भाषा–संपर्क का मौलिक साधन एवं सामग्री दोनों स्तर पर वर्ऽ कर रहा है। इसके व्दारा हिंदी भाषा के साहित्य मात्र के चर्चे नहीं, अपितु विऽ की प्रायः सभी भाषाओं के साहित्य का हम उसमें अनुवाद कर सकतें है। कम्प्यूटर पर इस प्रकार के Toolbar मुफत (Free) में Download किये जा सकते हैं। वैश्वीकरण के इस निजीकरण में यह लाभ बौध्दिक–वर्ग एवं सामान्य रुचि रखनेवाले पाठक – वर्ग के लिए भी सहाय्यक हुआ है।

विश्वभाषाओं में सर्वप्रथम अंग्रेजी भाषा के चलते, अन्य छोटे–छोटे राष्ट्रों की भाषाओं के साहित्य को भी, अनुवाद के कारण विश्वस्तर परिचय एवं साहित्यिक गरिमा प्राप्त हो गयी है।

भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की प्रक्रिया, विऽाभाषाओं से हिंदी में अनुवाद की प्रक्रिया से प्रायः कुछ मात्रा में सहज व स्वाभाविक कही जायगी। क्योंकि हमारी देशांतर्गत सभ्यता में भले ही अंतर है, परंतु संस्कृत से लेकर दक्षिणी भाषाओं तक तथा पूर्व की भाषाओं से हमारा जुड़ाव है। विश्वभाषाओं से अनुवाद कठिन प्रक्रिया है। वहाँ पर संस्कृति, सभ्यता और वर्तमान स्थिति में लक्ष्य भाषा–जिसमें अनुवाद किया जा रहा है, उस भाषा के युगीन प्रभाव का ध्यान रखना आवश्यक है।

तांत्रिक शब्दावली में अनुवाद को टीम वर्क कहते हैं। "अनुवाद संस्कृत की वद् धातु में धञ् प्रत्यय तथा अनु उपसर्ग लगाकर बनता है। वद् – बोलना, कहना, अनु–पश्चात्, पीछे बाद में बोलना अर्थात् अनुकथन ही अनुवाद होता है।" जो स्त्रोत भाषा में है, उसे लक्ष्य भाषा में कहना। अनुवाद के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं–1. शब्दानुवाद 2. छायानुवाद 3. भाषानुवाद अनुवाद में भाषा–प्रयोग और संज्ञाओं ध्यान रखना चाहिए। अनुवाद करते समय अनुवादक को सचेत रहना आवश्यक है। जपानी भाषा विभाग की अध्यक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ.उनिता सच्चिदानंद का कहना है कि "व्यक्ति जो बताना चाहता है, (स्त्रोत भाषा का) वही भाव पकड़कर अनुवाद करें। आशियाई भाषाओं से अनुवाद करते समय कठिनाई नहीं आती। कुछ साहित्यिक अनुवाद को पुनर्रचना पुनर्जीवन कहा जाता है।" इसके साथ–साथ इंग्रजी में लिखित उपन्यास 'हॅरी पॉटर' का अनुवाद करने से पहले, इस रचना को, भाषा को समझाने के लिए अनुवादक सुधीर दीक्षित इस संदर्भ में कहते हैं कि ". बहुत मुश्कील था, भाषा को अच्छी तरह समझाने के लिए मुझे जे.के. रॉलिंग की पहली पुस्तक को पैतीस बार पढ़ना पड़ा।" रचनाकार की रचनात्मकता को जानने के लिए उसकी रचनाओं को बार–बार पढ़कर उसके सृजन–कर्म के मूल तक पहुँचना जरुरी है।

रशियन भाषा से हिंदी में अनुदित पुस्तक 'बाल–ह्यदय की गहराइयाँ' 'वसीली सुखोम्लीन्स्की' व्दारा लिखित है। इस पुस्तक का हिंदी में अनुवाद 'योगेंद्र नागपाल' ने किया है। यह पुस्तक सन् 1979 में सोविएत संघ के प्रगति प्रकाशन से प्रकाशित हुयी। यह एक प्रगतिशील शिक्षा शास्त्री का बाल–शिक्षा का ग्रंथ है। उन्होंने 52 साल की छोटी–सी जिंदगी में कुल 35 साल बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में लगाये। वे

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL Govt. College of Arts & Science Aurangabad

इन 29 सालों मे शहर से दूर उक्राइनी गाव के पाब्लिश के स्कूल में प्रिंसिपल रहें। उन्हें 'समाजवादी श्रम–वीर तथा 'उक्राइनी जनतंत्र के सम्मानित शिक्षक' उपाधियाँ दी गयी तथा 'सोविएत शिक्षाशास्त्र अकादमी' का सह–सदस्य चुना गया। 'वसीली सुखोम्लीन्स्की' कहते हैं कि "स्कूल सच्चे अर्थों में संस्कृति का मंदिर केवल तभी बन पाता है, ज़बकि उसमें चार देवता प्रतिष्ठित हैः मातृभूमि, मनुष्य, पुस्तक और मातृभाषा।" उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य रहा – बच्चों की शिक्षा और उनका चरित्र–निर्माण। वह बच्चो में आत्मशिक्षा की तीव्र अभिलाषा को जगाने को ही सबसे बड़ी बात मानते थे। उन्होंने बालशिक्षा पर 'नागरिक का जन्म', 'पाब्लिश', 'माध्यमिक विद्यालय', 'समुदाय की विवेकपूर्ण सत्ता' आदि पुस्तकें लिखि। इस में उनके विलक्षण शिक्षक होने का समृध्द अनुभव मिलता है। 'वसीली सुखोम्लीन्स्की' स्वयं को 'अन्तोन सेम्योनोविच मकारेन्को' (1888–1936) का शिष्य मानते थे। इन से 'वसीली' ने 'अथाह मानवीयता' और 'उदात्त मानवीय आकांक्षाओं का आकर्षण' ग्रहण किया।

'वसीली सुखोम्लीन्स्की' के प्रस्तुत आत्मचरित्र में मुख्यतः छात्र और शिक्षक के बीच के गहरे अनुबंध का अभ्यासपूर्ण सराइनीय चित्र उपस्थित है। छात्रों के चरित्र–निर्माण में संपूर्ण योगदान देनेवाला यह शिक्षक स्वयं, फासिस्ट जर्मनी के साथ सोविएत संघ के युध्द में (1941–1945) पहले दिन–यह 23 वर्षीय शिक्षक लड़ने चला गया। दुश्मन के कब्जे में गए प्राब्लिश गांव में उनकी गर्भवती पत्नी बेरा रह गयी। फासिस्ट कैद में उन्हें बेटा हुआ। अमानवीय यातनाओं से उनके बच्चे की व पत्नी की कैद में मृत्यु हुयी। लड़ाई में वसीली भी बुरी तरह घायल हुये। परिवार की त्रासदी का उन्हें गहरा शॉक लगा। इस के बाद जर्मन फास्स्टिों की पराजय के दिन से लेकर–2 सितंबर 1970 तक वसीली सुखोम्लीन्स्की छात्रों के लिए जिए।

'वसीली सुखोम्लीन्स्की' पुस्तक के प्रास्ताविक में लिखते हैं कि, "बहुत सोच–विचार के बाद मैंने पुस्तक का नाम रखा 'बाल–ह्यदय की गहराइयाँ।' मेरा सारा जीवन बच्चों के शिक्षण में ही लगा है, इस लिए सोचता हूँ कि मुझे पुस्तक का यह नाम रखने का अधिकार है। मैं अध्यापकों को, उनको भी जो आजकल पढ़ा रहे हैं और उनको भी जो हमारे बाद स्कूल में आयेंगे –जीवन के एक लंबे चरण के बारे बमें बताना चाहता हूँ ! यह चरण एक पूरे दशक के बराबर है . यह वह काल है, जिसके दौरान नादान बच्चा इन्सान बनता है, उसके व्यक्तित्व का, व्यापकतम अर्थों में उसके चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षक के लिए वह उसके जीवन का एक बहुत बड़ा चरण होता है। अगर मुझ से कोई पूछे कि मेरे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण क्या रहा है? तो बिना सोचे ही उत्तर दूंगा : बच्चोंसे प्रेम।" उन्होंने पाठकों से यह अनुरोध किया है कि, 'उनके इस पुस्तक को बच्चों, किशोर व युवक–युवतियों के शिक्षण का गुटका न समझें यह शिक्षाशास्त्र की महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। उनकी दृष्टि में बच्चें 'नन्हें–इन्सान' है, उन्हें पाठों के अलावा अपनी चारों ओर की दुनिया को जानना–समझाना, शिक्षा पाने में उसकी सहाय्यता कैसे ली जाय, यह सीखाना चाहिए। बच्चों के मन में श्रेष्ठ भावना, अनुभूतियाँ जगाकर उन्हें पोषित करना चाहिए। उनमें मानव–गरिमा की चेतना, इन्सान की नेकी में विश्वास और मातृभूमि के प्रति असीम प्रेमभावनायें विकसित करनी चाहिए। यह कार्य विषय का ज्ञान देने के साथ–साथ चरित्र–निर्माण का भी है।

"बालह्यदय की गहराइयाँ' में दो भाग हैं– 1. खुशियों का स्कूल 2. बचपन के दिन। इन प्रमुख शीर्षक को में क्रमशः – प्रिंसिपल, पहला–साल बच्चों का अध्ययन, मेरे छात्रों के माता–पिता, नीले आकाश के तले स्कूल, स्वप्न–लोक, प्राथमिक विद्यालय क्या है? स्वास्थ और एक बार फिर स्वास्थ, शिक्षा–आत्मिक जीवन का एक अंश, 'प्रकृति पुस्तक' के तीन सौ पृष्ठ, देश–विदेश की हमारी यात्रायें, बच्चों को पढ़ाई में सफलता की खुशी प्रदान कीजिए, मातृभाषा, हमारा सौंदर्य विहार, जीवन आदर्श के स्त्रोत, तुम देश के भावी स्वामी हो, निडर और साहसी, गर्मियों से विदाई इत्यादी ... से अधिक विचार प्रेरक व चिंतनपरक तत्त्वों को लेकर उसे वास्तववादी

Govt. College of Arts & Science * Aurangabad *
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

रुप देकर 'वसीली सुखोम्लीन्स्की' ने स्कूली–शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

अनुवादक योगेंद्र नागपाल ने 'बालह्यदय की गहराइयाँ' का अनुवाद सहज और गतिशील धारा में किया हैं। उपरोक्त वसीली सुखोम्लीन्स्की ने प्रास्तविक में लिखे वाक्यांश। यहाँ जैसे थे उठाये हैं, इससे पूर्णतः पता चलता है कि योगेंद्र नागपाल की अनुवाद क्षमता व पद्धति सहज व गतिशील है। यह पुस्तक शब्दानुवाद व छायानुवाद का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। कुछ वाक्य हमें सहज अपने भाव में बाँध लेते हैं – "बच्चे क्यों इतने शौक से कथा–कहानियाँ सुनते हैं, उन्हें सांझ का झुटपुटा इतना अच्छा क्यों लगता है।" 'झुटपुटा' शब्द संपूर्ण वाक्य को अर्थपूर्ण बना देता है।

वसीली सुखोम्लीन्स्की ने बच्चों की बौध्दिक सृजन–क्षमता पर लक्ष्य करते हुए, 'नीले आकाश तले स्कूल' में कहा है – 'आकाश में अनूठा बादल तैर रहा है। मैं बच्चों से पूछता हूँ : 'बच्चों तुम्हें इस बादल में क्या दिखायी देता है 'बूढा गड़रियां टोपी पहने लाठी पर झुका खड़ा है,. वार्या कहती है.. 'वह देखो, उसके पास भेडों का झुंड है। आगे–आगे टेढे सींगोंवाला मेंढा है, और उसके पीछे मेमने हैं ..बूढे के कंधे पर झोला लटक रहा है और उस में से कोई झांक रहा है।' इसके अलावा पुस्तक में कई ऐसी जगहें हैं, जहाँ काव्य पंक्तियाँ है, उनका अनुवाद शब्द और भाव को लेकर सक्षम बन पड़ा है। 'वार्या' नामक छात्रा की ग्रीष्म संध्या की कविता इस प्रकार है –

नीला गगन, हरे वृक्ष, सफेद मकान
झिलमिलाते हैं सब जल में।
नीले दर्पण के सामने खड़ी हूँ मैं,
और फैला है सामने असीम संसार।
वहाँ है सूर्यास्त लाल,
और तैरता बादल का टुकड़ा सफेद।
वहां टिमटिमाता है तारा, और लंबी राह पर
उड़ चली है चिड़िया – लेती सूरज से विदाई।

वसीली सुखोम्लीन्स्की की 'बाल–ह्यदय की गहराइयाँ' पुस्तक 'मां–बाप और शिक्षकों से अंतरंग बातचीत' करनेवाली स्कूली शिक्षा–पध्दति में प्रयोग के आधारपर चरित्र निर्माण में सहाय्यक पुस्तक है। यह पुस्तक एक वैचारिक–ग्रंथ है। रशियन–भाषा से इस के हिंदी में अनुवाद के कारण हमें 'रशियन शिक्षा–शास्त्री' 'वसीली अलेस्कान्दोविच सुखोम्लीन्स्की के प्रायः संपूर्ण चरित्र का परिचय मिलता है। तथा उनके एक जागृत एवं महान शिक्षा–शास्त्री के रुप का उनके लेखन से साक्षात्कार होता है। अनुवादक योगेंद्र नागपाल ने इसे अनुवाद के व्दारा रशियन संस्कृति, सभ्यता से हमारा परिचय कराया है। यह पुस्तक अनुवाद का एक मौलिक प्रयास है।

विश्वभाषाओं से हिंदी में अनेक श्रेष्ठ अनुवाद हुए हैं, 'विदेशी कहानियाँ' में रशिया के टालस्टाय की 'तीन सवाल', लेबनान के खलील जिब्रान की 'दोस्त की वापसी', जापान के योशिकी हायामा की 'एक थैला सीमेंट' इत्यादि कहानियाँ हैं। इसके अनुवादक हैं–जैनेंद्रकुमार, श्रीपाद जोशी, कवि अज्ञेय। इन महान विदेशी लेखकों का साहित्य अनुवाद के जरिये हमारे समक्ष उपस्थित होता है। विदेशी संस्कृति व सभ्यता के प्रति हमारी जिज्ञासा जागृति व उसके समाधान का आधार अनुवाद को समझा जाय तो यहाँ अतिशयोक्ति न होगी।

प्रस्तुत शोध–आलेख के लिए सहाय्यक पुस्तकें–

1. 'बाल–ह्यदय की गहराइयाँ– वसीली सुखोम्लीन्स्की अनुवादक – योगेंद्र नागपाल–प्रगति प्रकाशन–मास्को.
2.भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिंदी – डॉ. माणिक मृगेश, वाणी प्रकाशन,दरियागंज, नई दिल्ली.
3.विदेशी कहानियाँ–संपादक यशपाल जैन,सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन कनॉट सर्कस, नई दिल्ली.

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad